तफ़सीरे सूरऐ हम्द

(तफ़सीरे नमूना)

लेखकः आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी

नोटः ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीऐ अपने पाठको के लिऐ हिन्दी जबान मे टाइप कराई गई है।

Alhassanain.org/hindi

बिस्मिल्लाह हिर्रेहमान निर्रहीम

सूरऐ हम्द

मक्की सूरत है और इस मे ७ आयात है

सूरऐ हम्द की ख़ुसूसियात

ये सूरत क़ुराने मजीद के दीगर सूरतो की निस्बत बहुत सी ख़ुसूसियात की हामिल है।

इन इम्तियाज़त का सर चश्मा नीचे लिखी खूबियां है।

1. लबो लहजे और असलूब बयानः

ये सूरत दीगर सूरतो से इस लिहाज़ से वाज़ेह इम्तियाज़ रखती है कि वो ख़ुदा की गुफ़्तुगू के उन्वान के हामिल है और ये बन्दों की ज़बान के तौर पर नाज़िल हुई है। दूसरे लफ़्ज़ों में इसमें ख़ुदावंदे आलम ने बन्दों को ख़ुदा से गुफ़्तुगू और मुनाजात के तरीक़े सिखाये है।

सूरे की इब्तेदा ख़ुदावंदे आलम की हम्दो सना से की गयी है। ख़ुदा शनासी और क़यामत पर ईमान के इज़हार के साथ साथ गुफ़्तुगू को जारी रख़ते हुए बन्दों के तक़ाज़ों, हाजात और ज़रूरीयात पर क़लाम को ख़त्म किया गया है।

2. असासे क़ुरानः

नबी अकरम के इरशाद के मुताबिक़ सूरह हम्द उम्मुल किताब है। एक मर्तबा जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी हज़रत (स.अ.व.व.) के ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (स.अ.व.व.) ने फ़रमायाः

क्या तुम्हें सबसे फज़ीलत वाली सूरत की तालीम दूँ जो ख़ुदा ने अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाई है। जाबिर ने अर्ज़ किया जी हां मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो मुझे इसकी तालीम दीजिये। हज़रत ने सूरह हम्द जो उम्मुल किताब है उन्हें तालीम फ़रमाई और ये भी इरशाद फ़रमाया कि सूरह हम्द मौत के अलावा हर बीमारी के लिए शिफ़ा है।

(मजमउल बयान, नूरूस्सक़लैन)

हम जानते है कि उम्म का मतलब है बुनियाद और जड़। शायद इसी बिना पर आलमे इस्लाम के मशहूर मुफ़स्सिर इब्ने अब्बास कहते हैः

हर चीज़ की कोई असास व बुनियाद होती है और कुरआन की असास सूरे फ़ातेहा है।

3. पैग़म्बरे अकरम (स.अ.व.व.) के लिए ऐज़ाज़:

ये बात क़ाबिल ऐ ग़ौर है कि क़ुरानी आयात मे सूरह हमद का तार्रुफ़ रसूले अकरम के लिए एक अज़ीम इनाम के तौर पर कराया गया है और इसे पूरे कुरआन के मुक़ाबले मे पेश फ़रमाया गया है।

जैसा के इरशादे इलाही है :

हमनें आपको सात आयतो पर मुश्तमिल सूरह हम्द अता किया जो दो मर्तबा नाज़िल किया गया और कुरआन ऐ अज़ीम भी इनायत फ़रमाया गया।

(सूरऐ हिज्र आयात ८७)

कुरआन मजीद अपनी तमाम तर अज़मत के बावजूद यहाँ सूरह हम्द के बराबर क़रार पाया। इस सूरह का दो मर्तबा नुज़ूल भी इस की बहुत ज़्यादा अहमियत की बिना पर है।

इन्ही कारणो की बिना पर इस सूरह की फ़ज़ीलत के सिलसिले में रसूल अल्लाह से मनक़ूल हैः

जो मुसलमान सूरह हम्द पढ़े उसका अजर व सवाब उस शख्स के बराबर है जिसने दो तिहाई कुरआन की तिलावत की हो (एक और हदीस में पूरे कुरआन की तिलावत के बराबर सवाब मज़कूर है) और इसे इतना सवाब मिलेगा गोया उसनें हर मोमीन और मोमिना को हदीया पेश किया हो।

4. तिलावत की ताकीद:

इसी बिना पर हज़रत इमामे सादिक़ (अ.स.) ने इरशाद फ़रमाया हैं।

शैतान ने चार दफा नाले व फ़रयाद कियाः पहला वो मौक़ा था जब उसे बहार निकाला गया। दूसरा वो वक़्त था जब उसे जन्नत से ज़मीन की तरफ़ उतारा गया। तीसरा वो लम्हा था जब हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.व.) को मबऊस ऐ

बारिसालत किया गया और आख़िर वो मुक़ाम था जब सूरह हम्द को नाज़िल किया गया।

(तफ़सीरे नूरूस्सक़लैन जिल्द १ पेज न. ४)

इस सूरे का नाम फ़ातेहा क्यों है।

फ़ातेहातुल किताब का माने है आग़ाज़े किताब (कुरआन) करने वाला सूरह। मुख्तलिफ़ रिवायात जो नबी अकरम (स.अ.व.व.) से नक़ल हुई है उनसे वाज़े होता है के ये सूरत ऑनहज़रत के ज़माने में भी उसी नाम से पहचाना जाता था यही से दुनियाए इस्लाम के एक अहमतरींन मसले की तरफ फ़िक्र का दरीचा कहलाता है और वो है कुरआन के जमा करने के बारे में एक गिरोह में ये बात मशहूर है कि कुरआने मजीद नबी अकरम (स.अ.व.व.) के ज़माने में मुन्तशिर व जुदा जुदा सूरत में था और आप के बाद हज़रत अबु बकर, हज़रत उस्मान, हजऱत उमर के ज़माने में जमा हुआ लेकिन फ़ातेहातुल किताब से ज़ाहिर होता है कुरआन मजीद पैग़म्बरे अकरम (स.अ.व.व.) के ज़माने में उसी मौजूदा सूरत में जमा हों चुका था और इसी सूरह हम्द से उसकी इब्तेदा हुई थी वरना ये कोई सब से पहले नाज़िल होने वाली सूरत तो नही जो ये नाम रखा जाये और वो ही इस सूरत के लिए फ़ातेहतुल किताब नाम के इंतेखाब के लिए कोई दूसरी दलील मौजूद है बहुत से दीगर मदारिक भी हमारे पेशे नज़र है जो इसकी हकीक़त के निशानदेह है कि कुरआने

मजीद बेसुरते मजमुए जिस तरह हमारे ज़माने में मौजूद है इसी तरह पैयम्बरे अकरम (स.अ.व.व.) के ज़माने में आप के हुक्म के मुताबिक जमा हो चुका था इनमे से चंद एक हम पेश करते है।

1. अली इब्ने इब्राहिम ने हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायात की है रसूले अकरम (स.अ.व.व.) ने हज़रत अली (अ.स.) से फ़रमाया के कुरआन रेशम के टुकड़ों, कागज़ के पुर्ज़ों और ऐसी दूसरी चीज़ों में मुन्तशिर है उसे जमा करो। उस पर हज़रत अली (अ.स.) मजलिस से उठ खड़े हुए और कुरआन को ज़र्द रंग के पारचे में जमा किया और फिर उस पर मोहर लगा दी अलावा इसके हदीस सकलैन जिसे शिया और सुन्नी दोनों ने नक़ल किया है गवाही देती है कि कुरआन किताबी सूरत में रसूल अल्लाह (स.अ.व.व.) के ज़माने में जमा हो चुका था पैग़म्बरे अकरम (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया मैं तुमसे रुख़्सत हो रहा हुँ और तुम में दो चीज़े बतौर यादगार छोड़े जा रहा हूः ख़ुदा की किताब और मेरा ख़ानदान।

एक अहम सवाल!

यहां ये सवाल पैदा होगा कि इस बात को कैसे बावर किया जा सकता है कि कुरआन रसूल अल्लाह (स.अ.व.व.) के ज़माने में जमा हुआ जबकि उलेमा के एक गिरोह में मशहूर है कि कुरआन पैगम्बर के बाद जमा हुआ है। हज़रत अली (अ.स.) के ज़रिये या दीगर अशखास के ज़रिये।

जवाब: जो कुरआन हज़रत अली (अ.स.) ने जमा किया था वो कुरआन तफ़सीरे शाने नुज़ूल आयात वग़ैरह का मजमुआ था।

1. बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्हीम

2. अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन

3. अर्रहमा निर्रहीम

4. मालेके योमिद्दीन

5. इय्याका नअबोदो व इय्यका नसतईन।

6. ऐहदे नस सिरातल मुस्तकीम।

7. सिरातल लज़ीना अनअमता अलैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज्जाल लीन।

तर्जुमा

1. शूरू अल्लाह के नाम से जो रहमान ओ रहीम है।

2. हम्द मख़सूस उस ख़ुदा के लिए जो तमाम जहानो का मालिक है।

3. ख़ुदा जो मेहरबान और बख़्शने वाला है। जिसकी रहमत आम खास सब पर फैली हुई है।

4. वो ख़ुदा जो रोज़े जज़ा का मालिक है।

5. परवरदिगार हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते है।

6. हमे सीधी राह की हिदायत फ़रमा।

7. उन लोगो की राह जिन पर तुने इनाम फ़रमाया। उनकी राह नहीं जिन पर तेरा गज़ब हुआ और ना वो जो कि गुमराह हो गए।

1. बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्हीम

शूरू अल्लाह के नाम से जो रहमान ओ रहीम है।

तफ़सीर

तमाम लोगों में यह रस्म है कि हर अहम और अच्छे काम का आगाज़ किसी बुज़ुर्ग के नाम से करते है। किसी अज़ीम इमारत की पहली ईंट उस शख़्स के नाम पर रखी जाती है। जिसमें बहुत ज्यादा क़ल्बी लगाव हो यानी उस काम को अपनी पसंदीदा शख्सीयत के नाम मनसूब कर देते है। मगर क्या ये बेहतर नहीं है कि प्रोग्राम को दावाम बख़्शने और किसी मिशन को बरकरार रखने के लिए किसी ऐसी हसती से मनसूब किया जाए जो पायेदार हमीशा रहने वाली हो और जिसकी ज़ात में फना का गुज़र ना हो इस जहान की तमाम मौजूदात पुरानी होने वाली है और ज़वाल की तरफ रवां दवां है। सिर्फ वही चीज़ बाक़ी रह जाएगी जो इस ज़ात ला यज़ाल से वाबस्ता होगी तमाम मौजूदात में फख़त ख़ुदा अज़ली व अबदी है। इसलिए चाहिए कि तमाम अमूर को उसी के नाम से शुरू किया जाऐ। उसके साये में तमाम चीज़ो को क़रार दिया जाये और उसी से मदद तलब की जाये।

इसी लिए कुरआन का आगाज बिस्मिल्ला से होता है। यही वजह है कि रसूले अकरम की मशहूर हदीस में हम पढ़ते हैः जो भी अहम काम खुदा के नाम के बगैर शुरू होगा नाकामी से हमकिनार होगा।

(तफ़सीरे अलबयान जिल्द न. १ पेज न. ४६१)

इंसान जिस काम को अंजाम देना चाहे चाहिए कि बिस्मिल्लाह कहे और जो अमल खुदा के नाम से शुरू हो वह मुबारक है।

इमाम मुहम्मद बाकिर फरमाते हैं कि जब कोई काम शुरू करने लगो बडा हो या छोटा बिस्मिल्लाह कहो ताकी वो बा बरकत भी हो और पुर अज अमनो सलामती भी।

खुलासा ये हैं कि किसी अमल कि पायदारी और बका बिस्मिल्लाह के राबते खुदा से वाबस्ता है। इसी मुनासबात से जब खुदा तआला ने पैगम्बर ए अकरम पर वही नाजिल फरमाई तो उन्होंने हुक्म दिया कि तबलीग ए इस्लाम की अजीम जिम्मेदारी को खुदा के नाम से शुरू करें।

इक़रा बिस्मे रब्बेकल लज़ी खलक़। (सूरे इक़रा आयत न. १)

हम देखते है कि जब तअज्जुबखेज़ और सख्त तूफान के आलम मे हज़रत नूह किश्ती पर सवार हुऐ, पानी की मौजे पहाड़ो की तरह बुलंद थी और हर सेकेन्ड खतरो का सामना था। ऐसे मे मंज़िले मक़सूद तक पहुँचने और मुश्किलात पर क़ाबू

पाने के लिऐ आपने अपने साथियो को हुक्म दिया कि किश्ती के चलते और रूकते बिस्मिल्ला कहो। (सूरह हूद आयत ४१)

लेहाज़ा उन लोगो ने इस खतरो से भरे सफर को तोफीक़े इलाही के साथ कामयाबी से तय कर लिया और अमनो सलामती के साथ कश्ती से उतरे (सूरे हूद आयत ४८)

जब जनाबे सुलैमान ने मलीकाऐ सबा को खत लिखा तो उसका उनवान बिस्मिल्ला ही को रखा।

ये (खत) सुलैमान की तरफ से है और बेशक इस का मज़मून ये है कि शूरू करता हुँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान और निहायत रहम वाला है।

(सूरऐ नमल आयत ३०)

इसी बिना पर कुरआन हकीम की तमाम सूरतो की इब्तेदा बिस्मिल्लाह से ही होती है। ताकि नोऐ बशर की हिदायत व सआदत का असली मक़सद कामयाबी से हमकिनार हो और बग़ैर किसी नुकसान के अंजाम पज़ीर हो सिर्फ सूरे तौबा ऐसी सूरत है। जिसकी इब्तेदा में बिस्मिल्लाह नज़र नही आती। क्योंकि उसका आग़ाज़ मक्का के मुजरिमो और वादा तोड़ने वालो से ऐलाने जंग के साथ हो रहा है। लिहाज़ा ऐसे मौकों पर ख़ुदा की सिफत रहमानो रहीम का ज़िक्र मुनासिब नहीं।

यहां एक नुक़ते कि तरफ तवज्जो देना ज़रूरी है।

1. क्या बिस्मिल्लाह सूरह हम्द का जुज़ है।

शिया उलेमा व मुहक़्क़ीन मे इस मसले पर कोई इख़्तेलाफ नहीं किया कि बिस्मिल्लाह सूरऐ हम्द और दिगर सूरे कुरआन का जुज़ है। बिस्मिल्लाह का तमाम सूरतो की इब्तेदा में होना उसूली तौर पर इस बात का ज़िंदा सबूत है के ये जुज़े कुरआन है। क्योंकि हमें मालूम है कि कुरआन में कोई इज़ाफ़ी चीज़ नहीं लिखी गई और बिस्मिल्लाह ज़माना ऐ पैगम्बर से लेकर अब तक सूरतो की इब्तेदा मौजूद है। इन सबके अलावा मुसलमानों की ये सीरत रही है कि वो कुरआन मजीद की तिलावत के वक्त बिस्मिल्लाह हर सूरत की इब्तेदा में पढ़ते रहे है। तवातुर से यह साबित है कि पैगम्बर अकरम भी इसकी तिलावत फरमाते थे। ये कैसे मुमकिन है कि जो चीज़ कुरआन का जुज़ न हो उसे पैगम्बर और मुसलमान हमेशा कुरआन के ज़मन पढ़ते रहे हो और सदा इस अमल को जारी रखा हो।

एक दिन माविया ने अपनी हुकुमत के ज़माने में नमाज़े जमात में बिस्मिल्लाह नही पढ़ी तो नमाज के बाद मुहाजरीन और अंसार के एक गिरोह ने पुकार कर कहाः

क्या मुआविया ने बिस्मिल्लाह को छोड़ दिया है या भूल गए है।

(बेहक़ी जुज़ २ पेज ४९)

2. ख़ुदा के नामो में से अल्लाह जामेतरीन नाम है।

बहरहाल कलमऐ अल्लाह जो ख़ुदा के नामो में से सबसे ज्यादा जामे है। ख़ुदा के इन नामो को जो कुरआन मजीद या दीगर मसादरे इस्लामी में आए है। अगर देखा जाए तो पता चलता है कि वो ख़ुदा की किसी एक सिफ़त को मुनअकिस करते है। लेकिन वो नाम जो तमाम सिफ़तो कमालाते इलाही की तरफ इशारा करते है। दूसरे लफ़्ज़ों में जो सिफ़त जलालो जमाल का जामे है। वो सिर्फ अल्लाह है।

यही वजह है कि ख़ुदा के दूसरे नाम अमूमन कलमऐ अल्लाह की सिफ़त की हैसियत से ज़िक्र किए जाते है। मिसाल के तौर पर चंद एक का ज़िक्र किया जाता है।

फइन्नल्लाहा गफूरूर रहीम

(सुरऐ बक़रा आयत २२६)

ये सिफ़ते ख़ुदा की सिफ़त बख़्शिश की तरफ इशारा है।

समीउन अलीम

समीअ इशारा है इस बात की तरफ़ की ख़ुदा तमाम सुनी जाने वाली चीज़ो से आगाही रखता है। और आलिम इशारा है कि वो तमाम चीजों से बा ख़बर है।

फइन्नल लाहा समीउन अलीम

(सूरऐ बक़रा आयत २२७)

ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह ही ख़ुदा के तमाम नामो में से जामेतरीन है। यही वजह है कि एक ही आयत मे हम देखते हैं कि बहुत से नाम अल्लाह करार पाए है।

अल्लाह वो है जिसके सिवा कोई माबूद नही वो हाकिमे मुतलक है। मुनज़्ज़ा है। हर ज़ुल्मो सितम से पाक है। अमन बख़्शने वाला है। सबका निगेहबान है। तवाना है। किसी से शिकस्त खाने वाला नहीं और तमाम मौजूदात पर क़ाबिर ओ ग़ालिब है और बा अज़मत है।

(सुरऐ हशर आयत २३)

इस नाम की जामीयत की एक वजह शायद यह है कि इमान ओ तौहीद का इज़हार सिर्फ़ (ला इलाहा इल्लल लाह) के जुमले से हो सकता है। और जुमला (ला इलाहा इल्लल अलीम इल्लल खालिक़ इल्लल राज़िक़) और दिगर इस किस्म के जुमले ख़ुदा से तौहीदो इस्लाम की दलील नहीं हो सकते यही वजह है कि दिगर मज़हब के लोग जब मुसलमानों के माबूद की तरफ इशारा करना चाहते हैं तो लफ्ज़ अल्लाह का जिक्र करते है। क्योंकि खुदावंद आलम की तारीफो तौसीफ लफ्ज़े अल्लाह से मुसलमानों के साथ मख़सूस है।

खुदा की रहमते आम और रहमते ख़ास

मुफास्सिरीन के एक तबके में मशहूर है कि सिफ़त रहमान रहमत ए आम की तरफ इशारा है। यह वो रहमत है जो दोस्त व दुश्मन, मोमीन और काफिर, नेक और बद सबके लिए है।

क्योंकि उसकी रहमत की बेहिसाब बारिश सबको पहुंचती है और इसका खवान ए नेमत हर कहीं बिछा हुआ है। उसके बंदे की जिंदगी का गुनागून रेनाइयो से भरा हुआ है। अपनी रोज़ी इसके दस्तर ख्वान से हासिल करते है। जिसपर बेशुमार नेमते रखी है। यह वो रहमते उमूमी है। जिसने आलमे हसती का इहाता कर रखा है और सबके सब इस दरिया ए रहमत में गोताज़न है। रहमते ख़ुदावंदे आलम की रहमते ख़ास की तरफ इशारा है यह वो रहमत है जो इसके सालेह और फ़रमा बरदार बंदो के साथ मख़सूस है। क्योंकि उन्होंने ईमान और अमले सालेह के बिना पर यह शाइस्तगी हासिल कर ली है कि वो इस रहमते एहसाने ख़ुसूसी से बेहरमंद हो जो गुनहगारो और ग़ारत गरो के हिस्से में नहीं हैं।

एक चीज़ जो मुमकिन है। उसी मतलब की तरफ इशारा हो यह है कि लफ्ज़ रहमान कुरआन में हर जगह मुतलक़ आया है जो उमूमियत की निशानी है जब के रहीम कभी मुक़य्द ज़िक्र हुआ है। मसलनः व काना बिल मोमेनीना रहीमा।

ख़ुदा मोमीनीन के लिए रहीम है।

(सुरऐ अहज़ाब आयत ४३)

और कभी मुतलक़ जैसे के सूरह हम्द में है। एक रिवायत में है कि हज़रत इमाम जाफर सादिक़ ने फरमाया

ख़ुदा हर चीज का माबूद है। वो तमाम मख़लूक़ात के लिए रहमान और मोमीनीन पर ख़ुसूसियात के साथ रहीम है।

(अल मीज़ान बे सनदे काफ़ी, तौहीद सदूक़ और मआनीउल अख़बार)

खुदा की दीगर सिफ़त बिस्मिल्लाह में क्यूं मज़कूर नहीं

यह बात क़ाबिले तवज्जो है कि कुरआन की तमाम सूरते सिवाऐ सुराऐ बरात के जिसकी वजह बयान हो चुकी है बिस्मिल्लाह से शुरू होती है और बिस्मिल्लाह में मख़सूस नाम अल्लाह के बाद सिर्फ सिफ़त ए रहमानियत का ज़िक्र है। इससे सवाल पैदा होता है कि यहाँ पर बाक़ी सिफ़त का ज़िक्र क्यूं नहीं है।

अगर हम एक नुक़्ते की तरफ तवज्जो करें तो उस सवाल का जवाब वाज़े हो जाता है और वो यह है कि हर काम की इब्तेदा में ज़रूरी है कि ऐसी सिफ़त से मदद ले जिसके असर तमाम जहान पर साया फिगन हो जो तमाम मौजूदात का इहाता किए हो और आलमे बोहरान में मुसीबतज़दो को निजात बख़्शने वाली हो। मुनासिब है कि इस हकीक़त को कुरआन की ज़बान से सुना जाऐ

इरशादे इलाही है

मेरी रहमत तमाम चीज़ों पर फैली है।

(सुरऐ आराफ आयत १५४)

एक और जगह हामेलान ए अर्श की एक दुआ ख़ुदा वंदे करीम ने यूँ बयान फ़रमाया है

परवरदिगार तूने अपना दामने रहमत हर चीज़ तक फैला रखा है।

(सुरऐ मोमीन आयत ७)

हम देखते हैं कि अम्बिया कराम निहायत सख़्त हवादिस और ख़तरनाक दुश्मनों के चंगुल से निजात के लिए रहमते ख़ुदा के दामन में पनाह लेते है। क़ौमे मूसा फिरओनियो के ज़ुल्म से निजात के लिए पुकारती है।

ख़ुदाया हमें ज़ुल्म से निजात दिला और अपनी रहमत का साया अता फ़रमा।

(सुरऐ युनूस आयत ८६)

हज़रत हुद (अ.स.) और उनके पैरोकार के सिलसिले में इरशाद है।

हज़रत हुद (अ.स.) और उनके साथियों को हमनें अपनी रहमत के वसीले से निजात दी।

(सुरऐ आराफ आयत ७२)

बिस्मिल्ला से वाज़ेह तौर पर ये दरस हासिल किया जा सकता हैं कि ख़ुदा वंदे आलम के हर काम की बुनियाद रहमत पर है और बदला या सज़ा तो अलग सूरत है जब तक यक़ीनी अवामिल पैदा नही हो सज़ा मुतहक़्क़ नही होती। जैसा कि हम दुआ में पढ़ते है।

ऐ वो ख़ुदा के जिसकी रहमत इसके ग़जब पर सबक़त ली गयी है। (दुआऐ जोशने कबीर)

इंसान को चाहिये के वो ज़िन्दगी के प्रोग्राम पर यूं अमल पैदा हो के हर काम की बुनियाद रहमतो मोहब्बत को क़रार दे और सख़्ती को फ़क़त बवक़्ते ज़रुरत इख़्तियार करे। कुरआन मजीद के ११४ सूरतो में से ११३ की इब्तेदा रहमत से

होती है और फ़क़त एक सूरह तोबा है जिस का आग़ाज़ बिस्मिल्लाह की बजाये ऐलान ऐ जंग और सख़्ती से होता है।

2. अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन

हम्द ओ सना उस ख़ुदा के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार और मालिक है।

तफ़सीर

सारा जहान उसकी रहमत में डूबा हुआ है।

बिस्मिल्लाह जो सूरत की इब्तेदा है उस के बाद बन्दों की पहली ज़िम्मेदारी ये है के वो आलमे वजूद के अज़ीम मबदा और उस की तमाम न होने वाली नेमतों को याद करें। वो बेशुमार नेमतें जिन्होंने हमारे पूरे वजूद को घेर रखा है। परवरदिगारे आलम की मारेफ़त की तरफ रहनुमाई करती है बल्कि उस रास्ते का सबब भी यही है क्योंकि किसी इंसान को जब कोई नेमत हासिल होती है तो वो फ़ौरन चाहता है कि उस नेमत के बख़्शने वाले को पहचाने और फरमाने फ़ितरत के मुताबिक़ उस की शुक्रगुज़ारी के लिए खड़ा हो और उस के शुक्रिया का हक़ अदा करे। यही वजह है कि उलेमाऐ इल्म कलाम इस इल्म की पहली बहस में जब गुफ़्तुगू मारेफ़त ख़ुदा की इल्लत व सबब के मुताल्लिक़ करते है तो वो कहता है कि फ़ितरी व अक़्ली हुक्म के मुताबिक़ मारेफ़ते ख़ुदा इस लिए वाजिब है क्योंकि मोहसिन के एहसान का शुक्रिया वाजिब है। ये जो हम कहते है कि मारेफ़त की

रहनुमाई उस की नेमतों से हासिल होती है तो उसकी वजह ये है कि ख़ुदा को पहचानने का बेहतरीन और जामेतरीन रास्ता असरारे आफरीनश व ख़िलक़त का मुतालेआ करना है। इन मे ख़ास तौर पर उन नेमतों का वजूद है जो नोऐ इंसान की ज़िंदगी को एक दूसरे से मरबूत करती है। उन दो वजह की बिना पर सूरऐ फ़ातेहातुल किताब -अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन- से शुरू होती है। इस जुमले की गहराई और अज़मत तक पहुँचने के लिए ज़रूरी है कि हम्द, मदह और शुक्र के दरम्यान फ़र्क़ और इसके नतायज की तरफ तवज्जो की जाये।

हम्दः नेक़ इख़्तियारी काम या नेक़ सिफ़त की तारीफ़ को अरबी ज़बान में हम्द कहते है यानी जब कोई सोच समझ कर कोई अच्छा काम अंजाम दे या किसी अच्छी सिफ़त को इंतेख़ाब करे जो नेक़ इख़्तियारी आमाल का सर चश्मा हो तो उस पर की गयी तारीफ व तौसीफ़ को हम्दो सताएश कहते है।

1. जो इंसान भी ख़ैर और बरक़त का सर चश्मा है वो पैग़म्बर और खुदायी रहनुमा नूर हिदायत से दिलो को मुनव्वर करता है और दरस देता है। जो सखी भी सख़ावत करता है और जो कोई तबीब जानलेवा ज़ख़्म पर मरहम पट्टी लगाता है। इनकी तारीफ़ का मबदा भी ख़ुदा की तारीफ़ है और इनकी सना दर असल उसी की सना है बल्कि अगर ख़ुर्शीद नूर अफ़शानी करता है। बादल बारिश बरसाता है और ज़मीन अपनी बरकते हमें देती है तो ये सबकुछ भी उसकी जानिब से है लिहाज़ा तमाम तारीफों की बाज़ गश्त इसी ज़ात बा बरक़त की तरफ़ है दूसरे

लफ़्ज़ों में -अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन- तौहीदे ज़ात, तौहीदे सिफ़ात और तौहीद अफआल की तरफ इशारे है। इस बात पर ख़ुसूसी ग़ौर किया जाऐ।

2. क़लमऐ हम्द से ये बात वाज़े तौर पर मालूम होती है कि ख़ुदा वंदे आलम ने ये तमाम इनायात और नेकीयां अपने इरादे व इख़्तियार से ईजाद की। इसलिए ये बात इन लोगो के नुक़्ते नज़र के ख़िलाफ़ है जो ये कहते है कि ख़ुदा भी सूरज की तरह एक मजबूर फैज़ बख़्श (मुफीद चीज़) है यहाँ ये बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि हम्द सिर्फ इब्तेदायी कार में ज़रूरी नही बल्के इख़्तेताम कार पर भी लाज़िम है जैसा के कुरआन हमें तालीम देता है ।

अहलेबहीश्त के बारे में कुरआन की नज़र से

पहले तो वो कहेंगे के अल्लाह तो हर ऐब व नक़्स से पाक है एक दूसरे से मुलाक़ात के वक़्त सलाम कहेंगे और हर बात के ख़ात्मे पर कहेंगे -अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन-

3. क़लमऐ रब के असली माना है किसी चीज़ का मालिक या साहिब जो इसकी तरबियत व इस्लाह करता हो क़लमेऐ -रबीबा- किसी शक़्स की बीवी की उस बेटी को कहते है जो इसके किसी पहले शोहर से हो लड़की अगरचे दूसरे शोहर से होती है लेकिन मुँह बोले बाप की निगरानी में परवरिश पाती है।

लफ़्ज़े -रब- मुतलक़ और अकेला तो सिर्फ़ ख़ुदा के लिए बोला जाता है अगर ग़ैरे ख़ुदा के लिए इस्तेमाल हो तो ज़रूरी है कि इज़ाफ़त भी साथ हो। मसलन हम कहते है रब्बुल्दार (घर का मालिक),या रब्बुल सफ़ीना (कश्ती वाला)।

तफ़्सीरे मजमउल बयान में एक और माने भी हैः बड़ा शख़्स जिसके हुक्म की इताअत की जाती हो. बईद नही के दोनों माने के बाज़गश्त एक ही असल की तरफ हो।

लफ्ज़े आलमीन आलम का बहुवचन है और आलम के माने है मुख़्तलिफ़ मौजूदात का वो मजमुआ जो मुशतरक सिफ़ात का हामिल हो या जिन का ज़मान और मकान मुशतरक हो। मसलन हम कहते है आलमे इंसान, आलमे हैवान या आलमे ग्याह या फिर हम कहते है आलमे मशरिक़, आलमे मग़रिब, आलमे इमरुज़ या आलमे दीरुज़। लिहाज़ा आलम अकेला जमीयत (ज़्यादती) का माना रखता है और जब आलमीन की शक़्ल मे जमा का सेगा हो तो फिर उससे इस जहान के तमाम मजमुओ की तरफ इशारा होगा।

एक रिवायत में जो शैख़ सूदूक़ ने उयूनूल अख़बार में हज़रत अली (अ.स.) से नक़्ल की है। उसमें है के इमाम ने अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन की तफ़्सीर के ज़िम्न में फ़रमायाः

रब्बुल आलेमीन से मुराद तमाम मख़लूक़ात का मजमूआ है चाहे वो बेजान हो या जानदार।

3. अर्रहमा निर्रहीम

वो ख़ुदा जो मेहरबान और बख़्शने वाला है उसके आम व ख़ास रहमत ने सबको घेर रखा है।

तफ़सीर

रहमान व रहीम के माने व मफहूम की वुसअत और उनका फ़र्क हम बिस्मिल्लाह की तफ़्सीर में तफ़्सील से बयान कर चुके है। अब दूबारा बयान की ज़रूरत नही।

जिस नुक़्ते का यहाँ इज़ाफ़ा होना चाहिये वो ये है कि दोनों सिफ़ात जो अहम तरीन औसाफ खुदावंद है। हर रोज़ की नमाज़ों में कम अज़ कम ३० मरतबा ज़िक्र होती है। २ मरतबा सूरह हम्द में और एक मरतबा बाद वाली सूरत में। इस तरह ६० मरतबा हम ख़ुदा की तारीफ़ सिफ़ते रहमत के साथ करते है। दर हक़ीक़त ये तमाम इंसानो के लिए एक दरस है कि वो अपने आप कों ज़िन्दगी में हर चीज़ से ज़्यादा इस अख़लाक़े ख़ुदावंदी को अपनाऐ। इसके अलावा वाक़ेईयत की तरफ़ भी इशारा है अगर हम अपने आप को ख़ुदा का बंदा समझते है तो ऐसा न हो के बेरहम मालिक अपने ग़ुलामो से जो सलूक रवा रखते है, हमारी निगाह में जचने लगे।

लिहाज़ा रब्बुलआलेमीन के बाद अर्रेहमांनिर्रहीम को लाना इस नुक़्ते की तरफ़ इशारा करता है कि हम क़ुदरत के बावजूद जो कि हमारी ऐने ज़ात है। अपने बन्दों पर मेहरबानी और लुत्फो करम करते है। ये बंदा नवाज़ी और लुत्फ़ बन्दे को ख़ुदा का ऐसा शीफ्ता व फरीफ्ता (महबूब) बना देता है कि वो इंतेहाई शग़फ़ से कहता है अर्रहमा निर्रहीम यहा से इंसान इस बात की तरफ मुतवज्जे होता है कि ख़ुदावंदे आलम का अपने बन्दों से और मालिकों के अपने मातहतों से सलूक में किस क़द्र फ़र्क़ है ख़ुसूसन ग़ुलामी के बदक़िस्मत दौर में।

4. मालेके योमिद्दीन

वो ख़ुदा जो रोज़े जज़ा का मालिक है।

तफ़सीर

क़यामत पर ईमान दूसरी असल है।

यहाँ इस्लाम की दूसरी अहम असल यानी क़यामत और दूबारा क़ब्रो से उठने की तरफ़ तवज्जो दिलायी गयी है और फ़रमाया गया है कि वो ख़ुदा जो जज़ा के दिन का मालिक है। इस तरह महवर और मबदा व मआद जो हर किस्म की अख़लाक़ी और मआशरती इस्लाह की बुनियाद है वुजुद इंसानी में इस की तकमील होती है।

ये बात क़ाबिले ग़ौर है कि क़यामत ख़ुदा की मिलकियत से ताबीर की गयी है और ये बात उस दिन के लिए ख़ुदा के इंतेहाई तसल्लुत और अश्या व अशख़ास पर उस के नूफ़ूज़ को मुशख़्ख़स करती है वो दिन कि जब तमाम इंसान उस बड़े दरबार में हिसाब के लिए हाज़िर होंगें। अपनी तमाम कही हुई बाते, काम यहा तक के सोचे हुए अफ़कार को अपने अंदर मौजूद पाऐगे। हत्ता के सुई की नोक के बराबर भी कोई बात नाबूद न होगी और फ़रामोश न की गयी होगी। अब वो इंसान हाज़िर है जिसे अपने तमाम आमाल अफ़आल की जवाब देही का बोझ अपने कांधे पर उठाना होगा। नोबत ये होगी कि जिन अमूर को वो खुद बजा नही लाया बल्कि

किसी तरीके या प्रोग्राम का बानी था उसमे भी इसे अपने हिस्से की जवाब देही का सामना होगा।

उसमे शक़ नही है कि खुदावंद आलम की ये मिलकियत उस तरह से ऐतबरी नही जिस तरह इस दुनिया में चीज़े हमारी मिल्कियत है क्योंकि हमारी मिलकियत तो एक कोनट्रेक्ट की बिना पर है या ऐज़ाज़ी व सनदी है। दूसरी सनदो व ऐज़ाज़ो के साथ ये मिलकियत ख़त्म भी हो सकती है लेकिन जहाने हस्ती के लिए ख़ुदा की मिलकियत हक़ीक़ी है और मौजूदात का ख़ुदा के साथ एक राबेता है कि जो एक लम्हे के लिए कट हो जाये तो दुनिया नाबूद हो जाये जैसे बिजली के बल्ब का राब्ता अपने बिजलीघर से टूट जाये तो उसी लम्हे में रौशनी ख़त्म हो जायेगी। दूसरे लफ़्ज़ों में इसकी मिलकियत ख़ालेकियत और रुबूबियत का नतीजा है वो ज़ात जिसने मौजूदात को ख़ल्क़ किया। अपनी रहमत के ज़ेरे नज़र इन की परवरिश की और लम्हे बा लम्ह उन्हें जिन्दगी बख़्शी वही मौजूदात का हक़ीक़ी मालिक है।

यहाँ एक सवाल पैदा होता कि क्या ख़ुदा उस जहान का मालिक नही अगर है तो फिर क़्यो हम उसे मालिके रोज़े जज़ा कहते है। इस सवाल का जवाब एक नुक़्ते की तरफ़ मुतवज्जे होने से वाज़ेह हो जाता है वो है कि ख़ुदा की मिलकियत अगरचे दोनों जहानों पर फैली है लेकिन इस मिलकियत का ज़हूर क़यामत के दिन बहुत ज़्यादा होगा क्योंकि उस दिन तमाम मादी रिश्ते और ऐतबारी मिलकियत

ख़त्म हो जायेगी उस दिन किसी शख़्स की कोई चीज़ नही होगी। यहा तक के शिफ़ाअत भी फरमाने ख़ुदा से होगी।

योमा ला यमलेको नफसन लेनफसिन शैआ वलअमरो योमाऐज़िन लिल्लाह।

तरजुमाः वो दिन के जब कोई शख़्स किसी चीज़ का मालिक न होगा कि उस के ज़रिए किसी की मदद कर सके और तमाम मामलात ख़ुदा के हाथ में होंगे।

(सूरे इनफेतार आयत १९)

क़यामत के दिन पर और उस बड़ी अदालतगाह पर ईमान के जिस में तमाम चीज़ो का बड़ी बारीक़ी से हिसाब लिया जायेगा। इंसान को ग़लत और नाशाइस्ता अमल से रोकने के लिए बहुत मोअस्सिर है नमाज़ के क़बीह और बड़े आमाल से रोकने की एक वजह ये है कि एक तो ये इंसान को आखेरत की याद दिलाती है जो इस के तमाम कामो से वाकिफ़ है और दूसरी अद्ले ख़ुदा की बड़ी अदालत को भी याद दिलाती है।

एक हदीस में इमाम सज्जाद (अ.स.) के बारे में है कि आप जब आयत मालिके योमिददीन तक पहुँचते थे तो उसका इस तरह से तकरार करते कि यूं लगता जैसे आप की रूह बदन से परवाज़ कर जायेगी।

(तफ़सीरे नूरूस्सकलैन जिल्द १ पेज न. १९)

बाक़ी रहा लफज़े योमिददीन ये ताबीर कुरआन में जहाँ जहाँ इस्तेमाल हुई उस से मुराद क़यामत है जैसा के कुरआन मजीद में सूरह इन्फेतार की आयत १७, १८

और १९ में वज़ाहत के साथ उस मफ़हूम की तरफ़ इशारा हुआ है। (ये ताबीर कुरआन मजीद में दस से ज़्यादा मरतबा इसी माने में इस्तेमाल हुई है।)

अब रही ये गुफ़्तुगू के उस दिन को योमिददीन क्यूँ कहते है तो इसकी वजह ये है कि वो दिन जज़ा का दिन है और दिन लुगत में जज़ा के माने में है और क़यामत का वाज़ेह तरीन प्रोग्राम जज़ा व सज़ा और एवज़ व सवाब है। उस दिन परदे हट जाऐगे और तमाम आलम का तमाम तर बारीक़ तफ़सीलात के साथ हिसाब होगा और हर शख़्स अपने अच्छे बुरे आमाल की जज़ा व सज़ा पालेगा।

5. इय्याका नअबोदो व इय्यका नसतईन।

परवरदिगार हम तेरी ही इबादत करते है और तुझसे मदद चाहते है ।

तफ़सीर

वाक़ई ये है कि गुज़िशता आयात तौहीद ज़ात व सिफ़ात बयान कर रही है और यहा तौहीद इबादत और तौहीद अफ़आल से मुताल्लिक़ गुफ़्तुगू है।

तौहीद इबादत ये है कि किसी शख़्स या चीज़ को ज़ाते ख़ुदा के अलावा इबादत के लायक न समझा जाये सिर्फ उसके हुक्म के सामने सर तस्लीम ख़म किया जाये। सिर्फ उसके क़वानीन और अहकाम को क़ुबूल किया जाये और उसकी ज़ाते पाक के अलावा किसी की किसी किस्म की इबादत व बंदगी करने और किसी और के सामने सर झुकाने से परहेज़ किया जाये।

सिर्फ ख़ुदा की ज़ात क़ाबिले एतमाद व हम्द है और ये लियाकत रखती है कि इंसान उसे तमाम चीज़ो में अपना सहारा क़रार दे। ये फ़िक्र और एतमादे इंसान का नाता तमाम मौजूदात से तोड़ कर सिर्फ ख़ुदा से जोड़ देगा। यहा तक के अब वो आलमे असबाब की तलाश भी हुक्मे ख़ुदा के तहत करता है यानी असबाब में भी वो क़ुदरत ख़ुदा का मुशाहेदा करता है क्योंके ख़ुदा ही तमाम असबाब का पैदा करने वाला है।

6. ऐहदे नस सिरातल मुस्तकीम।

हमे सीधी राह की हिदायत फ़रमा।

तफ़सीर

सिराते मुस्तक़ीम पर चलना।

परवरदिगार के सामने इज़हारे तस्लीम, इस की ज़ात की उबुदीयत इससे मदद की तलब के मरहले तक पहुँच जाने के बाद बन्दे का पहला तक़ाज़ा ये है के उसे सीधी राह, पाकीज़गी व नेक़ी की राह, अद्लो इंसाफ की राह और ईमान व अमले सालेह की हिदायत नसीब हो। ताके ख़ुदा जिसने उसे तमाम नेमतों से नवाज़ा है, हिदायत से भी सरफ़राज़ फरमाये।

यहा ये मशहूर सवाल सामने आता है कि हम हमेशा ख़ुदा से सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत की दरख़्वास्त करते रहते है। क्या हम गुमराह है और अगर बा फ़र्ज़ ये बात हमारे लिए दुरुस्त है तो पैग़म्बर अकरम (स.अ.व.व) और आइम्मा ऐ अहलेबेयत जो इंसाने कामिल का नमूना है। उनके लिए क्योंकर सही है। इस सवाल के जवाब में हम कहते हैः

जैसे पहले इशारा किया जा चुका है कि इंसान के लिए राहे हिदायत में हर लम्हा लग़ज़िश व ग़लती का ख़ौफ है लिहाज़ा चाहिये कि अपने आप को

परवरदिगार के इख़तियार में दे दें और उससे तक़ाज़ा करे कि वो उसे सीधी राह पर साबित क़दम रखे। दूसरी बात ये है कि हिदायत के माने भी तरीक़ तक़ामुल को तै करना यानी इंसान धीरे धीरे मराहिल नुक़्स को पीछे छोड़ता जाये और बुलंद मरहलो तक पहुँचता जाये। हम ये भी जानते है कि राहे कमाल यानी एक कमाल से दूसरे कमाल तक पहुँचने का रास्ता नामहदूद है।

इस बिना पर कोई ताज्जब नही कि अम्बिया व आइम्मा अलैहिमुस्सलाम भी ख़ुदा से सीराते मुस्तक़ीम की हिदायत का तक़ाज़ा करे क्योंकि कमाले मुतलक़ तो सिर्फ ज़ाते ख़ुदा है और बाक़ी सब बग़ैर किसी को अलग किऐ तकामुल के रास्ते में हैं। लिहाज़ा क्या हर्ज है कि वो भी ख़ुदा से बालातर दर्जात की तमन्ना करे।

हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़रमाते हैः

खुदावंद हमे उस रास्ते पर जो तेरी मोहब्बत और जन्नत तक है साबित क़दम रख कि यही रास्ता हलाक करने वाले ख़्वाहिशात और इन्हेराफी व तबाह करने वाली फिक्रो को रोकने वाला है।

(तफ़सीरे नूरूस्सकलैन जिल्द १ पेज न. १९)

सिराते मुस्तक़ीम क्या है।

आयाते कुरआने मजीद के पढ़ने से मालूम होता है कि सिराते मुस्तक़ीम ख़ुदा परस्ती, दीने हक़ और अहकामे खुदावंदी की पाबन्दी का नाम है। जैसा सूरे अनआम की आयत १६१ में है

तरजुमाः कह दीजिये कि मेरे परवरदिगार ने मुझे सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत की है जो सीधा दीन है वो कि जो उस इब्राहीम का आईन है जिसने कभी ख़ुदा से शिर्क़ नही किया।

दीने साबित यानी वो दीन जो अपनी जगह क़ायम रहे। इब्राहिम के आईने तौहीद और हर किस्म के शिर्क़ की नफ़ी का तआरुफ़ यहा पर सिराते मुस्तक़ीम के उन्वान से हुआ है और यही बात उस ऐतक़ादी पहलू को मुशख्खस करती है।

7. सिरातल लज़ीना अनअमता अलैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज्जाल लीन।

उन लोगो की राह जिन पर तूने इनाम किया। उनकी राह नही जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न वो कि जो गुमराह हुए।

तफ़सीर

दो ग़लत रास्ते

ये आयत हक़ीक़त में सिराते मुस्तक़ीम की वाज़े तफ़्सीर है जिसे हम पिछली आयत के ज़ैल में पढ़ चुके है । दुआ है कि मुझे उन लोगो के रास्ते की हिदायत फ़रमा जिन्हे किस्म किस्म की नेमतों से नवाज़ा है (नेमते हिदायत व नेमते तौफ़ीक़, मर्दाने हक़ की रहबरी की नेमत, नेमते इल्म व अमल, नेमते जिहाद व शहादत)। उन लोगो की राह नही जिन के बुरे आमाल और टेढ़े अकीदे की वजह से तेरा ग़ज़ब उन्हे दामन गीर हुआ और न ही उन लोगो की राह जो शाहराहे हक़ को छोड़ कर एक तरफ बैठ जाने वालो के आलम में है और गुमराह व सरगर्दां है।

सिरातल लज़ीना अनअमता अलैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज्जाल लीन।

हक़ीक़त ये है कि चूंकि हम राहो रस्मे हिदायत से पूरे तौर से आशना नही लिहाज़ा ख़ुदा हमें दस्तूर हिदायत दे रहा है कि हम अम्बियाए सालेहीन और दीगर वो लोग जो नेमतो अल्ताफे इलाही से नवाज़े गये है उनके रास्ते की ख़्वाहिश करें और हमे ख़बरदार किया गया है कि तुम्हारे सामने दो टेढ़े रास्ते मौजूद है। मग़ज़ूब अलैहिम का रास्ता और ज़ालीन का रास्ता उन दोनों कि तफ़्सीर हम बहुत जल्द ज़िक्र करेंगे।

चंद अहम नुकते

1- अल्लज़ीना अनअमता अलैहिम कौन है। सूरह निसाए आयत ६९ में इस गिरोह की निशानदेही इस तरह की गयी हैः

तरजुमा आयतः जो लोग ख़ुदा व रसूल (स.अ.व.व.) के अहकाम की इताअत करते है ख़ुदा उन्हें उन लोगो के साथ क़रार देगा जिन्हे नेमतो से नवाज़ा गया है और वो है अम्बिया, सादेक़ीन, शोहदाये राह हक़ और सालेह इंसान और ये लोग बेहतरीन साथी है।

जैसा कि हम देख रहे है उस आयत में शायद उस मानें की तरफ़ इशारा हो कि एक सही व सालिम तरक़्क़ी याफ़्ता और मोमिन मुआशरे की तशकील के लिए पहले अम्बिया और रहबराने हक़ को मैदान अमल में आना चाहिये इन के बाद सच्चे और रास्त बाज़ मुबल्लिग हो जिनकी गुफ़्तार और किरदार में एक से हो ताके वो उस रास्ते से अम्बिया के मक़ासिद को तमाम एतराफ़ में फैला दे।

फ़िक्री तरबियत के इस प्रोग्राम पर अमल दर आमद के दौरान में बाज़ गुमराह अनासिर राह हक़ में हाईल होने की कोशिश करेंगे। उनके मुक़ाबिल एक गिरोह को क़याम करना चाहिये उनमे से कुछ लोग शहीद होंगे और अपने ख़ून मुक़द्दस से शजरे तौहीद की आब्यारी करेंगे। चौथे मरहले में उन कोशिशों के नतीजे में सालेह लोग वजूद में आऐगे और इस तरह एक पाको पाकिज़ा, काबिल और मानवियत व रूहानियत से भरपूर मुआशरा वजूद में आ जायेगा।

इसलिए हम रोज़ाना सुबह शाम सूरह हम्द में पै दर पै ख़ुदा से दुआ करते है कि हम भी उन चार गिरोह की तरफ़ हक़ के राही क़रार पाऐ हक़ का रास्ता अम्बिया का रास्ता, सिद्दीक़ीन का रास्ता, शोहदा का रास्ता और सालेहीन का रास्ता है।

वाज़े है कि हर ज़माने को अंजाम तक पहुँचाने के लिए हमे उनमें से किसी रास्ते की पैरवी में अपनी ज़िम्मेदारी को अंजाम देना होगा।

2- मगज़ूब अलैहिम और ज़ालीन कौन है उन दोनों को आयात में अलग अलग बयान करने से ज़ाहिर होता है कि उनमे से हर एक किसी ख़ालिस गिरोह की तरफ़ इशारा है।

दोनों में फ़र्क़ के सिलसिले में तीन तफ़सीरें मौजूद है।

1. कुरआन मजीद में दोनों अल्फ़ाज़ के इस्तेमाल के मवाके से ज़ाहिर होता है कि मगज़ुब अलैहिम का मरहला ज़ालींन से सख़्त तर और बद तर है। बा अल्फ़ाज़

दीगर ज़ालीन से मुराद आम गुमराह लोग है और मगज़ुब अलैहिम से मुराद लजुज, गुमराही पर अड़े हुऐ या मुनाफ़िक़ हैं। यही वजह है कई एक मौक़ो पर ऐसे लोगो के लिए ख़ुदा का अज़ाब और लानत का ज़िक्र हुआ है।

सूरह नहल आयत १०६ में आया है।

तरजुमाः

जिन्होंने कुफ्र के लिए अपने सीनो को खोल रखा है उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है।

सूरऐ फतेह आयत ६ में है।

तरजुमाः

मुनाफेक़ीन मर्द और औरतों और मुशरिक मर्द और औरतें जो ख़ुदा के बारे में बड़े गुमान करते है ख़ुदा उन सब पर अज़ाब नाज़िल करेगा। उन सब पर अल्लाह का अज़ाब और उस की लानत है। वो उन्हें अपनी रहमत से दूर रखता है और उन्ही के लिए उसने जहन्नुम तैयार कर रखा है।

बहरहाल मगज़ुब अलैहिम वो है जो राहे कुफ़्र में अड़ियलपन और हक़ से दुश्मनी रखने के अलावा रहबराने इलाही और अम्बिया मुर्सलीन अलैहिस्सलाम को हर मुमकिन अज़ीयत व नुक़सान पहुँचाने से भी गुरेज़ नहीं करते।

तमाम शुद।

उर्दू तरजुमाः मौलाना सफदर हुसैन नज़फी।

हिन्दी टाईपः अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क।

२०.०३.२०१७

फेहरिस्त

सूरऐ हम्द.....2

सूरऐ हम्द की ख़ुसूसियात.....2

1. लबो लहजे और असलूब बयानः.....2

2. असासे क़ुरानः.....3

3. पैग़म्बरे अकरम (स.अ.व.व.) के लिए ऐज़ाज़: 3

4. तिलावत की ताकीद: 4

इस सूरे का नाम फ़ातेहा क्यों है।.....5

तर्जुमा.....9

1. बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्हीम 10

तफ़सीर.....10

1. क्या बिस्मिल्लाह सूरह हम्द का जुज़ है।.....13

2. ख़ुदा के नामो में से अल्लाह जामेतरीन नाम है।.....14

खुदा की रहमते आम और रहमते ख़ास.....15

2. अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन 20

तफ़सीर.....20

अहलेबहीश्त के बारे में कुरआन की नज़र से.....22

3. अर्रहमा निर्रहीम.....24

तफ़सीर.....24

4. मालेके योमिद्दीन.....26

तफ़सीर.....26

5. इय्याका नअबोदो व इय्यका नसतईन।.....30

तफ़सीर.....30

6. ऐहदे नस सिरातल मुस्तकीम।.....31

तफ़सीर.....31

सिराते मुस्तक़ीम पर चलना।.....31

सिराते मुस्तक़ीम क्या है।.....33

7. सिरातल लज़ीना अनअमता अलैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम 34

तफ़सीर.....34

दो ग़लत रास्ते.....34

चंद अहम नुकते.....35